16 अप्रैल 2020

स्नातक पार्ट 1 सब्सिडरी

विषय ■ राजनीति विज्ञान

प्रसंग ■■■■■राजनीति सिद्धान्त की प्रकृति एवम महत्व(शेष व्याख्यान संख्या 6)

By डॉ० देवेश पाण्डेय

MLS College sarisab pahi madhubani

मार्क्सवादी राजनीतिक सिद्धान्त (Marxist Political Theory)

उदारवादी-व्यक्तिवादी राजनीतिक सिद्धान्तों को उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मार्क्स, एंगेल्स तथा उनके अनुयायियों ने 'वैज्ञानिक समाजवाद' (Scientific Socialism) के माध्यम से चुनौती दी। आज कोई भी राजनीतिक सिद्धान्त मार्क्सवाद द्वारा की गई इतिहास, समाज, अर्थव्यवस्था, राजनीति आदि की व्याख्या की अवज्ञा नहीं कर सकता। मार्क्सवाद ने सामाजिक और आर्थिक विकास की प्रक्रिया को क्रमबद्ध एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बेहतर समझने में हमारी सहायता की है। सम्पूर्ण मानव मुक्ति के रूप में मार्क्सवाद ने दर्शनशास्त्र की नयी धारणा प्रस्तुत की। इसके अनुसार ज्ञान का मुख्य उद्देश्य केवल इस संसार को समझना ही नहीं है बल्कि मानव जीवन की भौतिक परिस्थितियों में परिवर्तन करना भी है। मार्क्स का विचार था कि व्यक्ति की मुक्ति इसी संसार में है और यह वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में क्रान्तिकारी परिवर्तन करके और समाजवादी समाज की स्थापना करके प्राप्त की जा सकती है। उदारवादी-पूँजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध मार्क्स की मुख्य शिकायत यह थी कि यह सम्पत्ति, असमानता और कुछ सम्पत्तिशाली परिवारों के ऐश्वर्य की सभ्यता है जो जनसाधारण के लिए निम्न और शोषणकारी परिस्थितियाँ पैदा करती है। इसके विपरीत समाजवाद व्यक्ति की मुक्ति की यदि सारी नहीं तो काफी हद तक, परिस्थितियाँ पैदा करने का प्रयास है। यह एक ऐसे समाज की स्थापना का प्रयत्न करता है जिसमें व्यक्ति द्वारा व्यक्ति का शोषण समाप्त होगा और जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपना व्यक्तित्व एवं क्षमताएँ विकसित करने का उचित अवसर मिलेगा। यह एक ऐसा वर्ग-विहीन और राज्य-विहीन समाज होगा जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का विकास सारे समाज के विकास की आवश्यक शर्त होगा।

मार्क्सवादी राजनीतिक सिद्धान्त मूलत: सामाजिक परिवर्तन और समाज के क्रान्तिकारी पुन: निर्माण का सिद्धान्त है। इस सन्दर्भ में मार्क्सवाद के तीन अन्तर्सम्बन्धित तत्त्व हैं: (*i*) वर्तमान तथा अतीत के समाजों का परीक्षण और आलोचना। इसे द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद और ऐतिहासिक भौतिकवाद का नाम दिया गया है: (*ii*) वर्ग-विभाजित और शोषणकारी समाज के विपरीत एक नये समाज का विकल्प। यह एक ऐसा समाज होगा जो उत्पादन के साधनों के सामूहिक स्वामित्व पर आधारित होगा। यह एक वर्ग-विहीन और राज्य-विहीन समाज होगा; तथा (*iii*) इस नये वैकल्पिक समाज का निर्माण कैसे होगा। पूँजीवादी समाज के विरुद्ध यह परिवर्तन सर्वहारा-वर्ग द्वारा क्रान्ति के माध्यम से सम्पन्न होगा जो अन्य वर्गों को समाप्त करके एक वर्ग-विहीन और राज्य-विहीन समाज की स्थापना करेगा।

मार्क्सवादी राजनीतिक सिद्धान्त के मूल तत्त्व हैं: उत्पादन का ढाँचा, वर्ग-विभाजन, वर्ग संघर्ष, सम्पत्ति सम्बन्ध, राज्य एक वर्ग के यंत्र के रूप में, क्रान्ति आदि। मार्क्सवाद ने भी अधिकार, स्वतंत्रता, समानता, सम्पत्ति, न्याय, प्रजातंत्र आदि का विश्लेषण किया परन्तु यह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि एक वर्ग-विभाजित समाज में ये सम्पत्तिशाली वर्ग के विशेषकारों में बदल जाते हैं। सच्ची स्वतंत्रता और समानता केवल एक वर्ग-विहीन और राज्य-विहीन समाज में ही प्राप्त हो सकती है।

मार्क्सवाद के अनुसार व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है और व्यक्ति का सार उसके सामाजिक सम्बन्धों की संपूर्णता में है व्यक्ति का अर्थ है समाज-में-व्यक्ति (**man-in society**)। समाज एक जीवन्त संस्था है जो उत्पादन के ढाँचे पर आधारित है। उत्पादन के साधनों के स्वामित्व के आधार पर समाज ऐतिहासिक दृष्टिकोण से एक वर्ग विभाजित समाज रहा है—एक ऐसा समाज जो उत्पादन के साधनों के मालिकों तथा गैर-मालिकों अथवा सम्पत्तिशाली तथा सम्पत्तिहीनों के बीच विभाजित रहा है। इन वर्गों के हित परस्पर विरोधी होने के कारण, यह वर्ग विभाजन वर्ग संघर्ष तथा झगड़ों को जन्म देता है। मार्क्सवाद के लिये भी समाज में राजनीति की धारणा झगड़े अथवा संघर्ष से ही आरम्भ

होती है परन्तु यह संघर्ष एक वर्ग संघर्ष होता है जो वर्ग आधिपत्य को जन्म देता है; अर्थात् वह वर्ग जो उत्पादन के साधनों का मालिक है वह राज्य, धर्म, समाज तथा अर्थव्यवस्था पर भी प्रभुत्व जमा लेता है। राजनीति एक वर्ग का आधिपत्य होने के कारण सारे समाज के हितों की सेवा नहीं कर सकती और यह प्रभुताशाली वर्ग के हाथ में आधिपत्य का एक साधन बन जाती है। अतः वर्ग आधिपत्य के विरुद्ध संघर्ष तथा क्रान्ति के माध्यम से एक वर्ग विहीन तथा राज्य विहीन समाज की स्थापना करना राजनीति का अन्य महत्त्वपूर्ण पक्ष है। इसके लिये मार्क्सवाद के अनुसार मजदूर वर्ग द्वारा, क्रान्ति के माध्यम से सत्ता हथियाना, सम्पत्तिशाली वर्ग का सफाया करना, वर्ग संघर्ष को समाप्त करना, समाजवादी उत्पादन के ढाँचें तथा समाजवादी अर्थव्यवस्था की स्थापना करना आवश्यक है जो एक वर्गविहीन तथा राज्यविहीन समाज को जन्म देगी। अतः जहाँ उदारवादी राजनीति का उद्देश्य आधुनिक उदारवादी पूँजीवादी प्रजातांत्रिक राज्य की स्थापना करना था, वहाँ मार्क्सवादी राजनीति का सम्बंध क्रान्तिकारी माध्यम से समाजवादी राज्य की स्थापना करना तथ अन्ततोगत्वा एक वर्गविहीन तथा राज्य विहीन समाज की स्थापना करना है।

सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सिद्धान्त और व्यवहार के रूप में मार्क्सवाद मार्क्स और एंगेल्स की रचनाओं से आरम्भ होता है जिसे बाद में कई दार्शनिकों, राजनीतिक नेताओं, क्रान्तिकारियों, शिक्षाशास्त्रियों आदि द्वारा समृद्ध किया गया। बीसवीं शताब्दी में मार्क्सवाद के अन्तर्गत कई अन्य शाखाएँ और व्याख्याएँ उत्पन्न हुई। मार्क्सवाद के कुछ महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तकार हैं: लेनिन, स्टालिन, बुखारिन, माओ, रोजा लग्जमबर्ग, ग्राम्शी, लूकाच, आस्ट्रो-साम्यवादी, फ्रैन्कफर्ट स्कूल, नव-वामपन्थ, यूरो-साम्यवाद आदि। प्रथम विश्व महायुद्ध तक मार्क्सवाद अत्यधिक निश्चयवादी था और यह एक ऐसी सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन की धारणा का प्रतिनिधित्व कर रहा था जिसकी पराकाष्ठा रूसी क्रान्ति में हुई। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद मार्क्सवाद में क्रान्तिकारी पक्ष पर कम और वर्तमान सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों की आलोचना पर अधिक बल दिया जाने लगा। 'समकालीन मार्क्सवाद' के नाम से प्रचलित यह सिद्धान्त ऊपरी ढाँचे (superstructure), संस्कृति, कला, सौन्दर्यशास्त्र, विचारधारा, अलगाववाद की समस्याओं के प्रति अधिक सचेत रहा।

16 अप्रैल 2020

स्नातक पार्ट 2 ऑनर्स

विषय ■ राजनीति विज्ञान

प्रसंग★★☆ तुलनात्मक राजनीति के उपागम(शेष व्याख्यान सँख्या 6)

By डॉ० देवेश पाण्डेय

MLS College sarisab pahi madhubani

तुलनात्मक राजनीति के प्रमुख आधुनिक द ष्टिकोण

(The Major Approaches of Comparative Politics)

तुलनात्मक राजनीति के प्रमुख आधुनिक द ष्टिकोण निम्नलिखित हैं :-

(I) व्यवस्था विश्लेषण द ष्टिकोण (System Analysis Approach)

(II) संरचनात्मक-कार्यात्मक द ष्टिकोण (Structural-Functional Approach)

(III) मार्क्सवादी-लेनिनवादी द ष्टिकोण (Marxist-Leninist Approach)

(I) व्यवस्था विश्लेषण द ष्टिकोण

(System Analysis Approach)

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद परम्परागत द ष्टिकोण से जटिल राजनतिक परिस्थितियों को समझने और सामान्य सिद्धान्त निर्माण में असफल रहने के बाद राजनीतिक विद्वानों को नवीन उपागमों की आवश्यकता अनुभव हुई ताकि इनकी सहायता से बदली हुई परिस्थितियों में राजनीतिक प्रक्रियाओं की वास्तविकता को समझा जा सके और विकासशील देशों की पेचिदा व चुनौती भरी राजनीतिक घटनाओं का स्पष्टीकरण दिया जा सके। ऐसे ही वातावरण में सर्वप्रथम जिस नए द ष्टिकोण का जन्म हुआ और जिसने बदली हुई राजनीतिक परिस्थितियों में राजनीतिक व्यवहार को समझने मे राजनीतिक विद्वानों की मदद की वह था-राजनीतिक व्यवस्था उपागम। इसके आगमन से तुलनात्मक राजनीति को न केवल वैज्ञानिक बनाने में सहायता मिली, बल्कि राजनीतिक व्यवहार के बारे में सर्वव्यापी नहीं तो कम से कम मध्य-स्तरीय सिद्धान्तों के निर्माण का मार्ग अवश्य प्रशस्त हुआ। इसके आगमन से पाश्चात्य राज-व्यवस्थाओं के साथ-साथ विकासशील देशों की राज-व्यवस्थाओं के अध्ययन पर ध्यान दिया जाने लगा और तुलना के नए मार्ग खुल गए।

राजनीतिक व्यवस्था विश्लेषण राजनीतिक व्यवस्था की अवधारणा पर आधारित है। राजनीतिक व्यवस्था विश्लेषण के आगमन से पहले राजनीतिक व्यवस्था के लिए संकीर्ण अर्थ में संस्थागत आधार पर ही प्रयुक्त किया जाता था। इसके लिए राष्ट्र, सरकार या राज्य जैसे शब्दों का प्रचलन आम था। लेकिन व्यवस्था विश्लेषण के आगमन ने राजनीतिक व्यवस्था को नया अर्थ प्रदान किया। अब शासन की संरचनाओं, राजनीतिक प्रक्रियाओं, गैर-राजनीतिक तत्वों - राजनीतिक दलों, लोकमत, दबाव समूह आदि का अलग-अलग अध्ययन न करके सम्पूर्ण राजनीतिक व्यवस्था के सन्दर्भ में समझना आवश्यक हो गया। अब पुराने प्रत्ययों जैसे राज्य, सरकार आदि की प्रासांगिकता कम होने के कारण तुलनात्मक विश्लेषण के अधिक व्यापक ढांचे की आवश्यकता का अनुभव किया जाने लगा। अब विचारधारा से मुक्त यथार्थवादी द ष्टिकोण की आवश्यकता को सभी राजनीतिक विद्वान महसूस करने लगे ताकि तुलनात्मक राजनीति को वैज्ञानिक बनाने में मदद मिल सके। इसलिए व्यवस्था विश्लेषण के आगमन से इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति होने की सम्भावना बढ़ गई।

राजनीतिक व्यवस्था का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition of Political System) :- राजनीतिक व्यवस्था की अवधारणा सामान्य व्यवस्था सिद्धान्त की संकल्पना से सम्बन्धित है। सामान्य व्यवस्था सिद्धान्त विभिन्न व्यवस्थाओं में कुछ मौलिक समानताएं तलाश कर अपना आधार कायम करता है। यह विभिन्न अनुशासनों के बीच खड़ी असमानताओं की दीवार को तोड़कर एकीकरण का प्रयास करता है। यद्यपि कई बार सामान्य व्यवस्था सिद्धान्त और व्यवस्था विश्लेषण को समान समझ लिया जाता है, लेकिन इन दोनों में परस्पर सम्बन्ध होते हुए भी काफी अन्तर है। सामान्य व्यवस्था सिद्धान्त से निकलने के बाद भी यह सामाजिक विज्ञानों के लिए बहुत विस्त त व महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। इससे प्रयुक्त व्यवस्था शब्द विशिष्टता का बोध कराता है और एक राजनीतिक व्यवस्था को दूसरे से अलग करता है। यहां व्यवस्था उस अवस्था का बोध कराती है जिसमें अलग-अलग प्रकार की अन्तःक्रियाएं घटित होती हैं। राजनीति शास्त्र में व्यवस्था उपागम का प्रवेश अन्य सामाजिक व प्राकृतिक विज्ञानों से हुआ है। आज तुलनात्मक राजनीति में व्यवस्था की अव धारणा का प्रचलन बढ़ चुका है। तुलनात्मक अध्ययन में तो एक उप-व्यवस्था के रूप में राजनीतिक व्यवस्था की अवधारणा का प्रयोग सभी राजनीति शास्त्री करने लगे हैं। ऑमण्ड व पॉवेल ने लिखा है-"राजनीतिक व्यवस्था की अवधारणा अधिक लोकप्रिय होती जा रही है क्योंकि यह किसी भी समाज की राजनीतिक क्रियाओं के सम्पूर्ण क्षेत्र की तरफ हमारा ध्यान आकृष्ट करती है।"

राजनीतिक व्यवस्था विश्लेषण का प्रतिपादन सर्वप्रथम डेविड ईस्टन ने किया है। उन्होंने 1953 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'The Political System' में राजनीतिक व्यवस्था को परिभाषित करते हुए कहा है-"किसी समाज में पारस्परिक क्रियाओं की ऐसी व्यवस्था को, जिससे उस समाज में बाध्यकारी अथवा अधिकारपूर्ण नीति निर्धारित होती है, राजनीतिक व्यवस्था कहा जाता है।" यद्यपि इस परिभाषा के आधार पर राजनीतिक व्यवस्था के मूल लक्षणों को समझना असम्भव है, लेकिन फिर भी यह राजनीतिक व्यवस्था की प्रकृति की व्याख्या अवश्य करती है। इसकी त्रुटि को दूर करने के लिए डेविड ईस्टन ने राजनीतिक व्यवस्था को फिर से परिभाषित करते हुए लिखा है-"राजनीतिक व्यवस्था स्वयं में परिपूर्ण सत्ता है जो उस वातावरण या परिवेश, जिसमें वह घिरी हुई होती है और जिसके अन्तर्गत वह परिचालित होती है, स्पष्ट तौर पर अलग रहती है।" आमण्ड व पॉवेल ने राजनीतिक व्यवस्था को परिभाषित करते हुए लिखा है-"राजनीतिक व्यवस्था से इसके अंगों की अन्तर्निर्भरता और इसके पर्यावरण में किसी न किसी प्रकार की सीमा का बोध होता है।" यहां अन्तनिर्भरता का तात्पर्य है कि यदि व्यवस्था के किसी अंग में कोई परिवर्तन आता है तो उससे अंगों पर भी प्रभाव पड़ता है।

इन परिभाषाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि राजनीतिक व्यवस्था का सम्बन्ध

न्यायसंगत शारीरिक दमन से जुड़ा हुआ है। ईस्टन की द ष्टि में यह मूल्यों का सत्तात्मक आवंटन करती है। आमण्ड व पॉवेल की द ष्टि में राजनीतिक व्यवस्था केवल सरकार के तीनों अंगों का ही बोध नहीं कराती, बल्कि इसमें सभी प्रकार की संरचनाएं शामिल होती हैं। आमण्ड व पॉवेल की द ष्टि में न्याय संगत शक्ति ही वह डोर है जो राजनीतिक व्यवस्था को सम्पूर्ण ताने बाने में बाँधती है। राजनीतिक व्यवस्था एक ऐसी उप-व्यवस्था है जिसके सभी भाग आपस में एक माला की तरह गुँथे हुए हैं। यह पर्यावरण से प्रभावित भी होती है, लेकिन उसकी दासी नहीं होती। यह प्रत्येक स्वतन्त्र समाज के कार्यों की वह व्यवस्था है जो शक्ति के न्यायसंगत प्रयोग द्वारा समाज में कानून व्यवस्था बनाए रखने तथा समाज को बदलने की शक्ति रखती है।